

# डॉ. लेस्ली एलन, यहजेकेल, व्याख्यान 10, निर्गमन पुराना और नया, यहजेकेल 20:1-44

© 2024 लेस्ली एलन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. लेस्ली एलन द्वारा यहजेकेल की पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 10, भाग 3, निर्गमन पुराना और नया, यहजेकेल 20:1-44 है।

अब हम यहजेकेल के अध्याय 20 पर विचार करेंगे, और ऐसा करते हुए, हम पुस्तक के एक नए प्रमुख भाग की ओर बढ़ रहे हैं, जिसमें, मुझे लगता है, अध्याय 20 से 24 शामिल हैं।

जब हमने अन्य दो भागों को देखा, तो हमने पाया कि उनके साथ एक व्यापक संरचना थी, एक संरचनात्मक रूपरेखा, जैसा कि अध्याय 1 से 7 और 8 से 19 में दिखाया गया है। हमारे पास एक तिथि, एक दृष्टि, प्रतीकात्मक क्रियाएँ और संदेश थे। यहाँ, हमारे पास उस संरचना का एक हिस्सा है।

अध्याय 20 और श्लोक 1 में हमें एक नई तिथि मिलती है, और हमें कोई दूसरा दर्शन नहीं मिलता, लेकिन हमें जो मिलता है वह है बुजुर्गों की एक यात्रा, जैसा कि हमें पुस्तक के दूसरे भाग की शुरुआत में अध्याय 8 में मिला था। फिर, अध्याय 24 के अंत तक हमारे पास संदेशों की एक श्रृंखला है, हालांकि हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि इन संदेशों में अध्याय 21 से 24 में प्रतीकात्मक क्रियाओं के संदर्भ शामिल हैं। इसलिए, कोई कह सकता है कि उस ढांचे का पालन करने का कुछ प्रयास है, लेकिन इसका पूरी तरह से पालन नहीं किया गया है।

हमारे कालक्रम में यह तिथि अगस्त 591 ईसा पूर्व के रूप में आती है, और हम आगे बढ़ गए हैं क्योंकि अध्याय 1 में यह जुलाई 593 थी, और फिर अध्याय 8 में यह सितंबर 592 थी। यरूशलेम के कुलीन नागरिकों का निर्वासन जो 597 में बेबीलोन आए थे, अब छह लंबे वर्षों तक चला, और हम पाते हैं कि बुजुर्ग एक बार फिर से आए, और जैसा कि मैंने अध्याय 8 में कहा, श्रम शिविरों में स्वशासन प्रतीत होता है, और ये यहूदी बुजुर्ग शिविर चलाते प्रतीत होते हैं, और वे यहजेकेल के पास आते हैं, जो स्पष्ट रूप से उसके भविष्यवक्ता अधिकार को स्वीकार करते हैं, और वे संभवतः घर जाने के बारे में अच्छी खबर की उम्मीद में उससे परामर्श करने आते हैं। वे अब इतने लंबे समय से निर्वासन में हैं। और यहजेकेल अपना उत्तर छंद 3 से 31 में दे रहा है।

लेकिन इससे पहले कि हम इस पहले संदेश को देखें, 32 से 44 तक आने वाले दूसरे संदेश पर नज़र डालना उपयोगी हो सकता है। और यह भूमि पर वापसी के बारे में बात करता है। जैसा कि हमने पहले के ग्रंथों में देखा था, यह बाद वाला संदेश दूसरे संस्करण के जोड़ जैसा दिखता है, एक दूसरा संस्करण जोड़ जिसमें यहजेकेल ने, इस मामले में, उस संदेश को पूरक बनाया जो पलायन से संबंधित था, उसका पहला संदेश। वह इसे एक नए संदेश के साथ पूरक करता है, और अब यह पहले संदेश के नकारात्मक संदेश के बाद एक सकारात्मक संदेश है, पहला संदेश।

और इसलिए, पद 1 में दी गई तिथि पहले संदेश से संबंधित है, और यदि हम जानना चाहते हैं कि दूसरा संदेश कब हुआ, तो हम केवल इतना कह सकते हैं कि यह 587 के बाद हुआ था, जाहिर है। लेकिन यह पलायन के बारे में नकारात्मक संदेश को फिर से पलायन के बारे में एक नए सकारात्मक संदेश के साथ जोड़कर एक विषयगत जुड़ाव है। हमें याद है कि, अध्याय 14 में, बुजुर्ग यहजेकेल से परामर्श करने आए थे, और भगवान ने इस आधार पर एक अनुकूल परामर्श से इनकार कर दिया था कि बुजुर्ग भी मूर्तिपूजक धर्म का पालन करते थे।

हमें बताया गया कि 14.3 में। उन्हें जो संदेश चाहिए था, उसे देने के बजाय, 14.6 में पश्चाताप का आह्वान किया गया था। इसी तरह, एक तरह से, यहाँ, यहजेकेल को अंततः भगवान द्वारा बुतपरस्त प्रथाओं के बुजुर्गों पर आरोप लगाने के लिए कहा जाता है, इसलिए एक अनुकूल संदेश को खारिज कर दिया जाता है। हम अध्याय 30 और 31 में पहले संदेश के अंत पर नज़र डाल सकते हैं। इसलिए, इस्राएल के घराने से कहो, भगवान भगवान इस प्रकार कहते हैं, क्या तुम अपने पूर्वजों के तरीके से खुद को अशुद्ध करोगे और उनकी घृणित चीजों के पीछे भटक जाओगे? जब आप अपने उपहार चढ़ाते हैं और अपने बच्चों को आग में चढ़ाते हैं, तो आप इस दिन के लिए अपनी सभी मूर्तियों के साथ खुद को अशुद्ध करते हैं।

और हे इस्राएल के घराने, क्या तुम मुझसे सलाह लेना चाहोगे? प्रभु परमेश्वर की यह वाणी है कि मेरे जीवन की शपथ, तुम मुझसे सलाह नहीं लेना चाहोगे। और इसलिए यही उत्तर है। नहीं, मैं तुम्हें कोई संदेश नहीं देने जा रहा हूँ।

लेकिन दूसरे दृष्टिकोण से, यहजेकेल को एक संदेश दिया गया है, और इसमें वह लंबी प्रस्तावना है जिसमें यह नहीं बताया गया है कि आप जो संदेश चाहते हैं उसे क्यों नहीं प्राप्त कर सकते। और यह निर्गमन की ओर वापस जाता है, निर्गमन का महान विषय। और हम सोच सकते हैं, अच्छा, कितना सकारात्मक विषय है।

कितना अद्भुत है। निर्गमन पूरे पुराने नियम में एक अद्भुत चीज़ के रूप में चलता है और यह परमेश्वर के साथ इस्राएल के सभी संबंधों के लिए आध्यात्मिक आधार है। यहजेकेल निर्गमन के बारे में एक इतिहास का पाठ भी देता है, लेकिन यह वह इतिहास का पाठ नहीं है जो इन बुजुर्गों ने इसके स्कूल में सीखा होगा।

यह बहुत अलग है। जैसा कि मैंने कहा, पलायन पुराने नियम में एक आधारभूत घटना थी। पुराने नियम में, इस्राएल के परमेश्वर को विशेष रूप से उस परमेश्वर के रूप में परिभाषित किया गया है जिसने इस्राएल को मिस्र से बाहर निकाला।

जैसे कि नए नियम में, ईसाई ईश्वर को ऐसे ईश्वर के रूप में वर्णित किया गया है जिसने यीशु को मृतकों में से जीवित किया। नए नियम में यीशु के पुनरुत्थान की तरह, पुराने नियम में, मिस्र से पलायन मूल प्रमाण है जो ईश्वर में विश्वास को उचित ठहराता है और प्रेरित करता है। हर साल, हम पलायन को याद करते हैं, जिसे एक त्यौहार, फसह के उत्सव के रूप में मनाया जाता था।

प्रारंभिक यहूदी धर्म में, यह निर्धारित किया गया था कि हर यहूदी जो फसह का पर्व मनाता है, उसे खुद को व्यक्तिगत रूप से निर्गमन में भाग लेने वाला मानना चाहिए। उसे अपने दिल में खुद

को वापस लाना था और कहना था, यह निर्गमन की घटना मेरे लिए लाभदायक है। वार्षिक फसल में, हर इस्राएली ने निर्गमन को इस्राएली विश्वास की महत्वपूर्ण शुरुआत और आधार के रूप में अपनाया।

और निर्गमन 14 और श्लोक 31 में लाल सागर पार करने के बाद एक अच्छा पाठ है। इसलिए इस्राएल ने उस महान कार्य को देखा जो प्रभु ने मिस्त्रियों के विरुद्ध किया था, इसलिए लोगों ने प्रभु का भय माना और प्रभु और उसके सेवक मूसा पर विश्वास किया। और उसके बाद यहूदियों और इस्राएलियों की हर पीढ़ी ने, निर्गमन के कारण, प्रभु का भय माना और प्रभु और उसके सेवक मूसा पर विश्वास किया।

ठीक है, पलायन की घटना वास्तव में घटनाओं के एक जटिल समूह में विभाजित है। और मिस्र से प्रारंभिक पलायन से शुरू होकर जंगल से यात्रा करने और अंततः भूमि, वादा किए गए देश में लाए जाने की एक श्रृंखला है। और अक्सर पुराने नियम में मिस्र से बाहर लाए जाने की बात नहीं की गई है, बल्कि मिस्र से ऊपर लाए जाने की बात की गई है।

और वह अंतिम क्रिया अंत, शुरुआत और अंत, मिस्र और फिर वादा किए गए देश पर ध्यान केंद्रित करती है। और इसलिए, जब आप पलायन के बारे में सोचते हैं, तो आप स्वचालित रूप से जटिल के बारे में सोचते हैं, हाँ, जंगल के माध्यम से, हाँ, अंतिम बिंदु भूमि में आना था। और इसलिए, यह भाषा, विशेष रूप से पालन-पोषण की, पलायन परंपरा के तीन तत्वों को अच्छी तरह से गले लगाती है।

और वास्तव में, पलायन के बारे में बात करने के लिए, आप वहां पूरे चक्र के बारे में सोचते हैं। तीसरा तत्व यहाँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भूमि पर केंद्रित है, वह भूमि जिसे निर्वासितों ने खो दिया था। इज़राइल के पारंपरिक विश्वास ने पलायन के आधार पर भूमि में रहने का विशेषाधिकार का दावा किया।

और इस विश्वास ने निर्वासितों के पहले समूह को आशा दी होगी, जिनसे यहजेकेल यहाँ उनके शासक बुजुर्गों के प्रतिनिधियों के माध्यम से बात कर रहा है। लेकिन यहजेकेल ने उस निर्गमन परंपरा की फिर से जांच की, और उसे ऐसी आशा के लिए कोई समर्थन नहीं मिला। इन बुजुर्गों के लिए यह संदेश बहुत ही चौंकाने वाला रहा होगा।

और हम अध्याय 16 के पहले भाग में यहजेकेल के संदेश की तुलना कर सकते हैं। वहाँ, उसने यहूदा के लोगों की आस्था और आशा की एक और महान परंपरा को तोड़ दिया। यरूशलेम की भूमिका परमेश्वर के शहर के रूप में, हमेशा परमेश्वर की सुरक्षात्मक देखभाल के अधीन।

फिर से सोचिए, यहजेकेल ने वहाँ क्या कहा। निर्वासितों के पास ऐसे विश्वास और ऐसी आशा को त्यागने के अच्छे कारण थे। और अब यहजेकेल, परमेश्वर के नाम पर, महान निर्गमन परंपरा को अपने सूक्ष्मदर्शी के नीचे रखता है।

वह इसका विश्लेषण करता है और पाता है कि इस्राएल की ओर से गहरी अविश्वास की भावना है। वह तथाकथित अद्भुत घटनाओं के जटिल स्वरूप का विश्लेषण करता है, और उसे बुजुर्ग के

लिए सांत्वना देने वाली कोई बात नहीं मिलती। इसके बजाय, उसे इसमें परमेश्वर के लोगों को देश से निर्वासित करने के लिए हर तरह का औचित्य मिलता है।

एक संपूर्ण निर्वासन, यरूशलेम के कुलीन वर्ग के निर्वासन से भी बदतर, जिसका प्रतिनिधित्व बुजुर्ग करते थे। इसलिए, यहजेकेल ने निर्गमन के पारंपरिक दृष्टिकोण को उलट दिया। अध्याय 16 की तरह ही, उसने विश्वास और आशा के अपरिवर्तनीय आधार के रूप में यरूशलेम के मूल्य को उलट दिया।

यहजेकेल 20 के अलावा, निर्गमन विषय का महत्व इस्राएल के परमेश्वर को इस्राएल के लिए अनुग्रह के परमेश्वर के रूप में चित्रित करना है। और यह अध्याय 20 के भीतर एक तत्व है, लेकिन इससे भी बहुत कुछ है। निर्गमन ने उनके साथ अपने रिश्ते की शुरुआत वैसे ही की जैसे वह आगे बढ़ाना चाहता था।

और पाँच, नौ और सात निर्वासितों के लिए, इसराइल की भूमि को उस अनुग्रह का एक अनिवार्य हिस्सा बनाने का अतिरिक्त मूल्य था। परमेश्वर ने उन्हें भूमि दी थी, इसलिए हर उम्मीद थी कि वह उन्हें वापस भेज देगा। भूमि और लोग एक साथ एक दिव्य अनुग्रह के रूप में चले गए, जैसे पुराने गीत, घोड़े और गाड़ी में प्रेम और विवाह।

तो, भूमि और लोग एक साथ चले गए। इतनी जल्दी नहीं, यहजेकेल कहता है, भगवान के नाम पर। एक बड़ी बाधा है जो निर्गमन की कहानी के हर एपिसोड में बड़ी है।

यह निर्वासितों की उम्मीदों पर पानी फेर देता है। कदम दर कदम, वह कहानी के हर प्रकरण को एक पूरे के रूप में दोहराता है। जहाँ उसके श्रोताओं को परमेश्वर की चिरस्थायी सद्भावना का सहज प्रतिबिंब दिखाई देता है, वहीं यहजेकेल को अंधेरी दरारें और दरारें दिखाई देती हैं जो एक और कहानी कहती हैं, इस्राएल की हठधर्मिता और अवज्ञा की एक दोहराई गई कहानी।

बुजुर्गों के लिए सांत्वना के लिए कुछ भी नहीं था। और इसलिए, हम पाँचवीं से नौवीं आयतों में निर्गमन परंपरा के इस पुनर्गठन की शुरुआत करते हैं। यह मिस्र में रहने वाले लोगों से शुरू होता है।

निर्गमन की पुस्तक में, इस्राएलियों को पीड़ितों के रूप में, बस पीड़ितों के रूप में, मिस्रियों द्वारा उत्पीड़ित के रूप में दर्शाया गया है। निर्गमन की पुस्तक में ऐसा कुछ भी नहीं है जो उन्हें इस स्तर पर बुरी रोशनी में दिखाए। लेकिन, जैसा कि हम पुराने नियम में पढ़ते हैं, जब हम यहोशू की पुस्तक में आते हैं, तो यहोशू के भाषणों में से एक में, वह क्या कहता है? और मैं अब आपको यहोशू अध्याय 24 और श्लोक 14 का संदर्भ दे रहा हूँ।

और वहाँ, यहोशू ने परमेश्वर के लोगों को चुनौती दी कि वे उन देवताओं को दूर करें जिनकी सेवा उनके पूर्वज नदी के पार और मिस्र में करते थे। उन देवताओं को दूर करें जिनकी सेवा तुम्हारे पूर्वज मिस्र में करते थे और प्रभु की सेवा करते थे। यदि तुम प्रभु की सेवा करने के लिए तैयार नहीं हो, तो आज ही चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे, चाहे वे देवता जिनकी सेवा तुम्हारे पूर्वज

करते थे या नदी के उस पार के क्षेत्र के अन्य देवता या एमोरियों के देवता जिनकी भूमि में तुम रह रहे हो।

लेकिन जहाँ तक मेरा और मेरे घराने का सवाल है, हम प्रभु की सेवा करेंगे। यह दिलचस्प है कि ऐतिहासिक बेवफाई की उस सूची में मिस्र और मिस्र के देवताओं की सेवा करने वाली बेवफाई का जिक्र है। और यह जकेल इस सबूत को, निर्गमन में नहीं, बल्कि यहोशू में, पीछे देखते हुए पकड़ रहा है।

यह जकेल इस दूसरी परंपरा को उठाता है और उसी के साथ आगे बढ़ता है। भजन संहिता की पुस्तक में एक और पाठ है। भजन 106 एक पोस्ट-एक्लेसियास्टिक भजन है जिसमें पुराने नियम की कई परंपराएँ शामिल हैं।

यह स्पष्ट रूप से यह जकेल से बाद की बात है। यह भी इसी परंपरा को आगे बढ़ाता है। मुझे लगता है कि यह यह जकेल 20, भजन 106 और श्लोक 7 से लिया गया है। हमारे पूर्वज जब मिस्र में थे, तो उन्होंने आपके अद्भुत कामों पर ध्यान नहीं दिया।

उन्होंने तेरी अपार करुणा को स्मरण न रखा, परन्तु लाल समुद्र के पास परमप्रधान के विरुद्ध बलवा किया। परन्तु मिस्र में भी, यह हो रहा है, मिस्र में भी।

और वह भजनकार की बात को उठा रहा है, जो यह जकेल कह रहा है, जो बदले में यहोशू की कही बातों पर निर्भर था। और यह सच है, हाँ, परमेश्वर ने इस्राएल को चुना था, श्लोक 5 में स्वीकार किया गया है कि, जिस दिन मैंने इस्राएल को चुना। हाँ, परमेश्वर की ओर से ऐसी सद्भावना थी।

और यही विकल्प होगा; यह व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की बहुत विशेषता है। और इसलिए, हाँ, यह सच है। और वह कहता है कि वह उन्हें मिस्र की भूमि से बाहर निकालकर उस भूमि पर ले जाएगा जिसे मैंने उनके लिए खोजा था।

दूध और शहद से भरी एक भूमि, सभी भूमियों में सबसे शानदार। खोज शब्द का प्रयोग निर्गमन परंपराओं में उन जासूसों के लिए किया जाता है जो भूमि की खोज और उसका पता लगाने गए थे। लेकिन अब परमेश्वर इसे अपने लिए अपनी पूर्व खोज के रूप में लागू करता है, जो दुनिया में सबसे अच्छी भूमि की तलाश कर रहा है जो उसे मिल सकती है।

और यही वह जगह थी जहाँ वे जा रहे थे। और इसलिए, और इसलिए, यह परंपरा के बहुत अनुरूप है। लेकिन, श्लोक 7 में, मैंने उनसे कहा, और यह मिस्र में है, तुम में से हर एक, अपनी आँखों से घृणित चीजों को दूर फेंक दो, और मिस्र की मूर्तियों, मिस्र की मूर्तियों से अपने आप को अशुद्ध मत करो।

और इसलिए हम यहाँ हैं, शुरू से ही कुछ गलत था, यहाँ तक कि जब वे मिस्र में थे, तब भी जब उन्होंने वादा किए गए देश के रास्ते पर जंगल के माध्यम से यात्रा शुरू नहीं की थी। और, वास्तव

में, उन्होंने इनकार कर दिया। मिस्र में इस्राएलियों ने इनकार कर दिया, यहजेकेल आगे कहता है, लेकिन उन्होंने मेरे खिलाफ विद्रोह किया और मेरी बात नहीं सुनी।

उनमें से किसी ने भी ऐसा नहीं किया। उन्होंने अपनी आँखों से घिनौनी चीज़ों को फेंक दिया, न ही उन्होंने मिस्र की मूर्तियों को त्यागा। और यह परमेश्वर के लिए एक समस्या बन गई, और परमेश्वर ने लगभग उन्हें वहीं छोड़ दिया, लेकिन उसने ऐसा न करने का फैसला किया।

और श्लोक 8 आगे कहता है, मैंने सोचा कि मैं उन पर अपना क्रोध उंडेलूँगा और मिस्र देश के बीच में उन पर अपना क्रोध बरसाऊँगा, वहीं और उसी समय। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। मैंने अपने नाम की खातिर काम किया ताकि यह उन राष्ट्रों की दृष्टि में अपवित्र न हो जिनके बीच वे रहते थे, जिनकी दृष्टि में मैंने उन्हें मिस्र देश से बाहर लाकर खुद को उन पर प्रकट किया था।

इसलिए, परमेश्वर ने इन स्वेच्छाचारी इस्राएलियों के साथ, शुरू से ही स्वेच्छाचारी व्यवहार किया, और इसका कारण उनसे कोई लेना-देना नहीं था; यह केवल अपने नाम या प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए था क्योंकि मिस्रियों को मिस्र से अपने लोगों को बचाने के उसके इरादे के बारे में पता था। और इसलिए यह मेरे नाम की खातिर है। अगला प्रकरण श्लोक 10 से 17 में होता है।

यह पारंपरिक पैटर्न का अनुसरण करता है, और इस जंगल के चरण में पाप पहले से ही शामिल था। यह अब पुराने जंगल की कहानियों में कानून देने और कानून तोड़ने के पारंपरिक पैटर्न का अनुसरण कर सकता है। लेकिन कानून तोड़ने का उल्लेख श्लोक 11 में इसके विपरीत है: जब मैं उन्हें मिस्र की भूमि से बाहर ले आया और उन्हें जंगल में ले आया, श्लोक 10, मैंने उन्हें अपनी विधियाँ दीं, उन्हें अपने नियम दिखाए, जिनके पालन से हर कोई जीवित रहेगा।

और इसलिए, परमेश्वर ने बहुत स्पष्ट रूप से बताया कि उसकी नई वाचा के मानक क्या थे। और बेशक, यहजेकेल यहाँ उस पाठ पर वापस आ रहा है जो उसके लिए अध्याय 18 में बहुत महत्वपूर्ण था, और यह लैव्यव्यवस्था 18 और आयत 5 थी, तुम मेरी विधियों और मेरे नियमों का पालन करोगे, ऐसा करने से तुम जीवित रहोगे। इसलिए, इस्राएलियों के लिए कोई बहाना नहीं था, यह स्पष्ट रूप से बताया गया था कि जीवन का मार्ग क्या था।

और यहाँ, लैव्यव्यवस्था 18:5 की याद दिलाते हुए, अध्याय 18 में, इसे उस भूमि में भविष्य के जीवन का एक युगांतशास्त्रीय संदर्भ दिया गया था जिसकी वे आशा कर सकते थे। लेकिन यहाँ, अब, यह आशीर्वाद का जीवन है; जहाँ कहीं भी इस्राएली हैं, जीवन का आशीर्वाद उन्हें तब मिलता है जब वे परमेश्वर की ज्ञात इच्छा का पालन करते हैं। पॉल में, रोमियों अध्याय 7 में, श्लोक 10 में, वह इन आज्ञाओं को एक आज्ञा कहता है जिसने जीवन का वादा किया था, एक जंगल की पीढ़ी ने दूसरा काम करना चुना, और वह पीढ़ी कभी भी वादा किए गए देश तक नहीं पहुँची।

यहजेकेल इस बात पर जोर दे रहा है कि जो लोग मिस्र से निकले थे, उनमें से यहोशू और कालेब को छोड़कर, वे कभी भी अपने इच्छित गंतव्य तक नहीं पहुँच पाए, बल्कि वे जंगल में ही मर गए। और भूमि के वादे को विरासत में पाने का काम अगली पीढ़ी को मिला। और श्लोक 16 में, उनके

दिलों का अपनी मूर्तियों की ओर जाने का संदर्भ है, और यह सोने के बछड़े की घटना, सोने के बछड़े की पूजा का संदर्भ प्रतीत होता है।

लैव्यव्यवस्था 18:5 के अनुसार, उन्हें इस समय मर जाना चाहिए था, लेकिन जंगल में रहने वाली पहली पीढ़ी वहाँ नहीं मरी, और फिर वे कुछ समय तक जीवित रहे, और उन्होंने अपना जीवन, अपना जीवनकाल पूरा किया, लेकिन जंगल में ही रहे। यह एक वास्तविक मृत्यु थी, यह वादा किए गए देश को प्राप्त न करने में एक आध्यात्मिक मृत्यु थी। और इसलिए, 17 में, मेरी आँख ने उन्हें बचा लिया। और फिर श्लोक 18 से 26 दूसरी जंगल की पीढ़ी की ओर मुड़ते हैं।

उनके लिए भी, लैव्यव्यवस्था 18:5 का कोई मतलब नहीं था। पद 21 में, निर्गमन पीढ़ी के बच्चों ने मेरे खिलाफ विद्रोह किया। उन्होंने मेरी विधियों का पालन नहीं किया और मेरे नियमों का पालन करने में सावधान नहीं रहे, जिनके पालन से हर कोई जीवित रहेगा। और इसलिए, यहजेकेल के पास अब तक निर्गमन परंपरा के बारे में कहने के लिए कुछ भी अच्छा नहीं है, सिवाय भगवान की ओर से, भगवान की प्रारंभिक कृपा, भगवान की प्रारंभिक पसंद, और उन्हें बख्शने के, लेकिन वह भी भगवान की अच्छी प्रतिष्ठा को बनाए रखने और अन्य राष्ट्रों की राय में अपनी प्रतिष्ठा को न खोने के लिए था।

तो फिर, परमेश्वर ने उन्हें बचा लिया। लेकिन श्लोक 23 दिलचस्प है। और क्या हमने पुराने नियम में पहले भी ऐसा कुछ सुना है? इसके अलावा, मैंने जंगल में उनसे शपथ ली कि मैं उन्हें राष्ट्रों में तितर-बितर कर दूँगा और उन्हें देश-देश में तितर-बितर कर दूँगा क्योंकि उन्होंने मेरे नियमों का पालन नहीं किया बल्कि मेरी विधियों को अस्वीकार कर दिया और मेरे विश्रामदिनों को अपवित्र किया और उनकी आँखें अपने पूर्वजों की मूर्तियों पर लगी रहीं।

परमेश्वर ने जंगल से बाहर आने वाले इस्राएलियों की दूसरी पीढ़ी के जीवनकाल में भी जंगल में निर्वासन के बारे में सोचा था। अब, यह बहुत ही क्रांतिकारी और बहुत चौंकाने वाला है कि यहाँ वह परमेश्वर को निर्वासन की एक निलंबित सजा सुनाते हुए देखता है जो अंततः इस्राएल का भाग्य होगा। खैर, यह कहाँ से आया है? खैर, यह निर्गमन में एक श्लोक की व्याख्या है जो निर्वासन को निर्दिष्ट नहीं करता है, लेकिन यह बहुत ही अशुभ है, और यह निर्गमन अध्याय 32 और श्लोक 34 में है।

और मूसा लोगों की ओर से मध्यस्थता करता है, और परमेश्वर अनिच्छा से कहता है कि ठीक है, मैं उन्हें देश में जाने दूँगा, लेकिन मेरे पास अभी भी उनके खिलाफ, इस्राएल के खिलाफ कुछ है। फिर भी, निर्गमन 32-34 में, जब दण्ड का दिन आएगा, तो मैं उन्हें उनके पाप के लिए दण्डित करूँगा। यहजेकेल राजाओं के माध्यम से यहोशू की उस महान महाकाव्य गाथा के बारे में सोचता है, और वह उस दण्ड को, वास्तव में, वादा किए गए देश से निर्वासन के रूप में देखता है।

वे उस देश में जाएंगे, लेकिन वे हमेशा के लिए उसका आनंद नहीं ले पाएंगे। उन्हें उस देश से बाहर निकाल दिया जाएगा। और इसलिए, यह उस अस्पष्ट पाठ की एक विशेष व्याख्या है।

इसे वादा किए गए देश से निर्वासन की अंतिम सज़ा के रूप में फिर से व्याख्यायित किया गया है। और एक बार फिर भजन 106 यहजेकेल के नेतृत्व का अनुसरण करता है और सुनिए कि यह पद 27 में क्या कहता है। भजन 106 और पद 27 को पद 24 से पढ़ा गया है।

तब उन्होंने वादा किए गए देश को तुच्छ जाना, क्योंकि उनके पास उसके वादे पर कोई भरोसा नहीं था। वे अपने तंबुओं में बड़बड़ाने लगे और प्रभु की आवाज़ नहीं सुनी। इसलिए, उसने अपना हाथ उठाया और उनसे शपथ ली कि वह उन्हें जंगल में गिरा देगा और उनके वंशजों को राष्ट्रों में तितर-बितर कर देगा और उन्हें भूमि पर बिखेर देगा।

भजनकार यहजेकेल 20 पढ़ता है, और वह निर्गमन 32 34 में उस अस्पष्ट पाठ की उसी व्याख्या का उपयोग करता है। तो, हम यहाँ हैं। यहजेकेल और भजनकार दोनों की समझ यह है कि निर्गमन 32 में उस वाक्य ने समय के गलियारों में इस्राएल का पीछा किया और न केवल 597 में बल्कि 587 में भी यहूदा को पीछे छोड़ दिया जब यहूदा एक राष्ट्रीय राज्य नहीं रह गया।

अध्याय 18, 587 के बाद का संदेश, इस पार-पीढ़ीगत दृष्टिकोण के अंत की बात कर सकता है क्योंकि यह अंततः परमेश्वर की दीर्घकालिक योजना में सच हो गया था। लेकिन यहाँ अध्याय 20 के पहले भाग में, हम अभी तक 587 तक नहीं पहुँचे हैं, और यह 587 से पहले का संदेश इसे धारण कर सकता है। यह अभी भी लागू है कि परमेश्वर की पार-पीढ़ीगत इच्छा है कि अंततः, निर्गमन निर्वासन में परिणत होता है।

लेकिन श्लोक 25 में, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, हमें और भी ज़्यादा झटके लगते हैं। श्लोक 25 में यह आश्चर्यजनक रूप से कहा गया है कि परमेश्वर ने इस्राएल को ऐसे नियम भी दिए जो अच्छे नहीं थे। हम सोचते हैं, अरे, वे कहाँ हैं? और श्लोक 25 में ही इसका उल्लेख है।

इसके अलावा, मैंने उन्हें ऐसी विधियाँ दी जो अच्छी नहीं थीं और ऐसे नियम दिए जिनके अनुसार वे जीवित नहीं रह सकते थे। ये नियम लैव्यव्यवस्था 18:5 के विपरीत थे और इनसे जीवन धन्य नहीं होता था। इसका क्या मतलब है? खैर, श्लोक 26 इस पर थोड़ा प्रकाश डालता है।

मैंने उन्हें उनके ज्येष्ठ पुत्र की बलि चढ़ाने के उनके उपहारों के माध्यम से अपवित्र किया क्योंकि वहाँ बाल बलि थी। ज्येष्ठ पुत्र, जाहिर तौर पर बहुत ही बुतपरस्त तरीके से, परमेश्वर को बलि चढ़ाया जा रहा था। खैर, हम पेंटाटेच को देख सकते हैं और कह सकते हैं कि मुझे वहाँ ऐसा नहीं दिखता।

यहाँ इसका क्या मतलब है? खैर, वहाँ ज्येष्ठ पुत्रों का एक नियम था, और वह निर्गमन 13 और आयत 12 से 13 में था। और यह जानवरों के ज्येष्ठ पुत्रों के छुटकारे के बारे में बात करता है और उन्हें मरना था। हाँ, उन्हें मरना था।

लेकिन हाँ, जब ज्येष्ठ पुत्रों को पैसे देकर छुड़ाया जाना था और उन्हें मारा नहीं जाना था, लेकिन ज्येष्ठ पशुओं को मारा जाना था। और ऐसा वास्तव में कहा गया है कि अगर हम निर्गमन 13 और पद 5 को देखें, जो नियम निर्धारित करता है। निर्गमन 13 और पद 12 और 13।

तुम उन सभी को प्रभु के लिए अलग करोगे जो पहले गर्भ को खोलते हैं। क्रिया पर ध्यान दें, हम उस पर वापस आने वाले हैं कि उन सभी को प्रभु के लिए अलग करोगे जो पहले गर्भ को खोलते हैं। और फिर दो श्रेणियाँ हैं।

तुम्हारे पशुओं में से जितने पहिलौठे नर हों, वे सब यहोवा के हैं। और हर एक पहिलौठे गधे के बदले में एक भेड़ देना। और यदि तुम उसे न छोड़ाओ, तो उसकी गर्दन तोड़ देना।

लेकिन इसका मतलब यह है कि जैसे दूसरे जानवरों को मारा जाता है, वैसे ही इंसानों को भी मारा जाता है। लेकिन इंसानों के बारे में क्या? अपने बच्चों में से हर ज्येष्ठ नर को छोड़ना होगा। एक निश्चित रकम चुकाओ और उन्हें मत मारो।

और फिर निर्गमन की कहानी में एक कारण दिया गया है कि कैसे भगवान ने पहलौठों को बचा लिया। मिस्रियों के पहलौठों को मार दिया गया, लेकिन इस्राएलियों के पहलौठों को नहीं। और इसलिए पाठ खुद यही कहना चाहता है।

लेकिन प्रभु के लिए अलग करना एक दिलचस्प शब्द है क्योंकि अगर हम हिब्रू पाठ को देखें, तो हमें फिर से वही क्रिया मिलती है। अलग करने के लिए यह क्रिया वही है जो पद 31 में बच्चे की बलि के लिए इस्तेमाल की गई है।

जब आप अपनी भेंट चढ़ाते हैं और अपने बच्चों को आग में से गुज़ारते हैं, तो अपने बच्चों को आग में से गुज़ारना बाल बलि को दर्शाता है। और गुज़ारना वही है जो पुराने निर्गमन पाठ में प्रभु के लिए अलग किए जाने के बारे में बताया गया है।

आप इसे अनुवाद कर सकते हैं, इसे सौंप सकते हैं, या इसे दोनों चरणों में सौंप सकते हैं। पहले मामले में छुटकारे के द्वारा आप बच्चे को प्रभु को सौंप देते हैं। बच्चे को प्रभु को सौंप दें।

स्वीकार करें कि यह ईश्वर का है। और दूसरे मामले में बाल बलि के साथ आप बच्चे को एक मूर्तिपूजक ईश्वर को सौंप देते हैं। या आप बाल बलि में लिप्त होकर यहोवा के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं मानो वह एक मूर्तिपूजक ईश्वर हो।

और यह भी हो सकता है कि प्राचीन इस्राएल में बाल बलि के पक्षधरों ने इस क्रिया के दोहरे उपयोग का फ़ायदा उठाया हो। और उन्होंने इसे बाल बलि का समर्थन करने के रूप में गलत तरीके से व्याख्यायित किया। हाँ, हम अग्नि बलिदान द्वारा ईश्वर को समर्पित हो रहे हैं।

हाँ, हम इसे भगवान को सौंप रहे हैं, और हमें इसे भगवान को सौंपना चाहिए, है न? अरे नहीं, आप ऐसा नहीं कर रहे हैं। आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। लेकिन भगवान कहते हैं, ऐसा ही हो। मैं उन्हें ऐसा करने देता हूँ।

मैंने उन्हें ऐसा करने दिया। और मैं आपको रोमियों के अध्याय एक में एक दिलचस्प अंश का संदर्भ देना चाहता हूँ, क्योंकि हम पाते हैं कि वहाँ पौलुस गलत मूर्तिपूजक प्रथाओं के बारे में बात कर रहा है।

और रोमियों 1:24 में, परमेश्वर ने उन्हें उनकी अशुद्धता के लिए छोड़ दिया। और फिर, आयत 26 में, परमेश्वर ने उन्हें अपमानजनक वासनाओं के लिए छोड़ दिया। और आयत 28 में, परमेश्वर ने उन्हें एक नीच मन और उन कामों के लिए छोड़ दिया जो नहीं करने चाहिए।

परमेश्वर ने उन इंसानों को गलत रास्ता अपनाने के लिए छोड़ दिया, जिससे उन्हें न्याय का सामना करना पड़ता। ऐसा लगता है कि यह वही विचार है जिसके कारण परमेश्वर ने ऐसा होने दिया।

निर्गमन 20 का अर्थ यह है: परमेश्वर ने वे नियम दिये, परन्तु उसने उन्हें गलत व्याख्या करने की अनुमति भी दी।

उसने उन नियमों की गलत व्याख्या को स्वीकार कर लिया। और ऐसा लगता है कि यह एक ऐसा तरीका है जिससे हम अपने तरीके से सोच सकते हैं जिस तरह से पाठ यहाँ सोचना चाहता है। अब, यहजेकेल जो कुछ कह रहा है वह श्लोक 30 और 31 की प्रारंभिक बात है।

क्योंकि यहजेकेल कहता है, तुम अपने पूर्वजों की तरह ही हो। तुम भी अपने पूर्वजों की तरह ही बुरे हो, क्योंकि तुमने परमेश्वर के विरुद्ध जाकर और बुतपरस्त रीति-रिवाजों को अपनाया है। और इसलिए ये पुराने जीन हैं जो तुम्हें दिखा रहे हैं।

यह एक बुरा खून है, और इसलिए यही कारण है कि परमेश्वर की ओर से कोई अनुकूल संदेश नहीं हो सकता। इसलिए हम यहाँ हैं, बहुत सी आयतों में 'नहीं' कहने वाला यह लंबा तीखा हमला, उस निर्गमन परंपरा को नीचे खींचता हुआ, और इसकी व्याख्या इस संदर्भ में करता है कि इज़राइल लगातार कहाँ गलत हो रहा है और अपने लिए न्याय का संग्रह कर रहा है, जो वास्तव में 587 के विनाश की ओर इशारा करता है।

फिर हम दूसरे भाग, 32 से 44 तक आते हैं। विषय निर्गमन है, लेकिन अब इसका संदेश अलग है। और मुझे लगता है कि यहाँ 587 के बाद के संदेश के साथ विषयगत पूरकता है।

यह संदेश पहले के संदेश के निर्गमन विषय को जारी रखता है, लेकिन वास्तव में यह दूसरे संस्करण का हिस्सा है। 587 का वह दुखद न्याय श्लोक 31 और 32 के बीच है। लेकिन निर्गमन का विषय जारी है, लेकिन अब सकारात्मक व्याख्या के बड़े पैमाने पर।

यह पूरी तरह से सकारात्मक नहीं है, लेकिन सकारात्मक व्याख्या का एक बड़ा उपाय है। निर्गमन का परमेश्वर फिर से उस चमत्कार को करने जा रहा है। अब आप निर्गमन को सकारात्मक रूप से देख रहे हैं, और आपका यहजेकेल पुरानी परंपरा के साथ एक स्टैंड ले रहा है।

लेकिन वह इसे परमेश्वर द्वारा किए जाने वाले कार्य के एक प्रकार या सादृश्य के रूप में उपयोग कर रहा था। दूसरा पलायन होने जा रहा है, और परमेश्वर फिर से चमत्कार करने जा रहा है, जिसमें बेबीलोनवासी अब मिस्रियों की भूमिका निभा रहे हैं। लेकिन यहजेकेल अभी भी

नकारात्मकता के लिए कुछ जगह पाता है, और हमने पुस्तक में पहले के संदेशों में देखा है जो यहजेकेल की भविष्यवाणी की दूसरी अवधि से संबंधित हैं कि वह इस्राएल के भविष्य के अपने दर्शन में आशा और चुनौती आश्वासन और चेतावनी को मिला सकता है।

और इसलिए, हम आयत 32 से 44 में पाएंगे। लेकिन आयत 32 वास्तव में निराशा के बजाय आशा की वर्तनी कर रही है। परमेश्वर अपने लोगों को निष्क्रिय उपासकों के बीच निर्वासन के मूर्तिपूजक वातावरण में नहीं छोड़ेगा।

आपके मन में जो है, श्लोक 32, वह नहीं होगा कि हम राष्ट्रों की तरह बनें, देशों की जनजातियों की तरह और लकड़ी और पत्थर की पूजा करें। लेकिन निर्वासन के रवैये में यहाँ कुछ प्रकार का त्याग भी प्रतीत होता है। बेहतर होगा कि हम अपने विदेशी पड़ोसियों की तरह पूजा करें, जिनकी भूमि में हम निर्वासन में रह रहे हैं।

या शायद हम, यही रास्ता है। जब विदेशी लोग किसी दूसरी जगह जाते हैं, तो वे अंततः आत्मसात हो जाते हैं। और जर्मन, जर्मनों के बच्चे अपनी जर्मन भाषा खो देते हैं, मैक्सिकन के बेटे अपनी स्पेनिश भाषा खो देते हैं, और इसी तरह आगे भी ऐसा ही होता है।

और इसलिए, यहाँ एक तरह का आत्मसातीकरण है। हमें ऐसा करना चाहिए। यही रास्ता है, एक स्वाभाविक रास्ता है।

और इसलिए, एक तरह की निराशा है लेकिन साथ ही हार भी माननी पड़ती है। यही जीवन है। हमें अपने बुतपरस्त पड़ोसियों की तरह पूजा करनी चाहिए।

नहीं, परमेश्वर अपने लोगों पर अपना संप्रभु अधिकार घोषित करता है। मैं अपने जीवन की शपथ लेकर तुम्हारे ऊपर राजा बनूँगा, श्लोक 33। निश्चय ही मैं बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा और क्रोध से भरा हुआ होकर तुम्हारे ऊपर राजा बनूँगा।

और हमें सीधे निर्गमन की कहानियों से ली गई भाषा मिलती है। एक शक्तिशाली हाथ, एक फैला हुआ हाथ। और राजा होने का यह उल्लेख, अगर आप निर्गमन को जानते हैं तो आपको निर्गमन 13 में गाए गए उस गीत के बारे में भी पता होगा, है न? मुझे सही पाठ देखने दें।

निर्गमन 15, यह सही है। निर्गमन 15 की 18 वीं आयत में। प्रभु सदा सर्वदा राज्य करेगा।

इसी तरह मूसा का वह गीत निर्गमन 15 में समाप्त होता है। प्रभु हमेशा-हमेशा तक राज्य करेगा। और यहाँ इस तरह का राजत्व है।

उस परंपरा का यह हिस्सा राजत्व था, और यहाँ इसे पुनः प्राप्त किया जा रहा है। मैं एक नए तरीके से तुम्हारा राजा बनूँगा।

और नए पलायन में पुराने पलायन का यह प्रतिरूप होना चाहिए। मैं उन मूर्तियों के बजाय तुम्हारा राजा बनूँगा जिनके बारे में तुम बात कर रहे हो, उन मूर्तिपूजक देवताओं की छवियों के बजाय

जिनकी तुम पूजा करने के बारे में सोच रहे हो। इसलिए, परमेश्वर उन अन्य देवताओं को हावी नहीं होने देगा।

वह अपने लोगों को वापस लेने जा रहा है। लेकिन निर्वासितों को यह याद रखना चाहिए कि पहली पीढ़ी जंगल में ही मर गई थी और कभी वादा किए गए देश तक नहीं पहुँच पाई। और इसलिए नए निर्गमन में भी वैसा ही जंगल का दृश्य होने वाला था।

और हमने अभी इस बारे में बात की। मैं इस आयत 36 पर तुम्हारे साथ न्याय करूँगा। जैसे मैंने जंगल में तुम्हारे पूर्वजों के साथ न्याय किया था, वैसे ही मैं तुम्हें लाठी के द्वारा पार करवाऊँगा।

और यह मेरा निर्णय होगा कि यह चेकपॉइंट, यह सुरक्षा जांच, यह स्क्रीनिंग प्रक्रिया होगी। और आपको चरवाहे के डंडे के उठने का इंतज़ार करना होगा ताकि हर भेड़ आगे जा सके। यह जांच होगी।

और मैं पाऊँगा कि आपमें से कुछ विद्रोही हैं। और मैं कहूँगा नहीं, नहीं, नहीं, नहीं। आप वादा किए गए देश में नहीं जा सकते।

तुम जंगल में मरोगे, जैसे तुम्हारे कुछ पूर्वज जंगल में मर गए थे। और इसलिए, यह श्लोक 39 पर आगे बढ़ता है। हे इस्राएल के घराने, तुम्हारे लिए प्रभु परमेश्वर यों कहता है, तुम में से हर एक अब से अपनी मूर्तियों की सेवा करो।

और यह व्यंग्य है। यह सिर्फ व्यंग्य है। चलो, अपनी मूर्तियों की पूजा करो।

लेकिन इसका मतलब है कि इससे आपको कुछ हासिल नहीं होगा। जो करना है वो है उस बुतपरस्त पूजा से छुटकारा पाना। लेकिन निर्वासितों के लिए यह चेतावनी है कि अगर वे घर जाना चाहते हैं तो उन्हें अपने तौर-तरीके सुधारने चाहिए, अपनी बुतपरस्ती छोड़ देनी चाहिए।

इस बिंदु पर, हम अध्याय 18 के क्षेत्र में वापस आ गए हैं, जिसमें उचित जीवनशैली अपनाकर वापसी की तैयारी करने का संदेश है। 18 और 20, वे एक ही तरंगदैर्घ्य पर हैं। लेकिन फिर आगे की ओर देखना, अंततः घर जाने के बारे में है।

और वहाँ क्या होने जा रहा है? खैर, वादा किए गए देश में फिर से शुद्ध उपासना होने जा रही है। श्लोक 40: मेरे पवित्र पर्वत पर, इस्राएल के ऊँचे पर्वत पर, प्रभु परमेश्वर कहते हैं, वहाँ इस्राएल का सारा घराना, वे सभी, उस देश में मेरी सेवा करेंगे। वहाँ, मैं उन्हें स्वीकार करूँगा।

वहाँ, मैं तुम्हारे दान और तुम्हारी सभी पवित्र चीज़ों के लिए तुम्हारे उपहारों की पसंद की माँग करूँगा। एक सुखद सुगंध के रूप में, मैं तुम्हें स्वीकार करूँगा। और यह, ज़ाहिर है, अध्याय 40 से 48 का एक छोटा संस्करण है।

और यहाँ श्लोक 40 में हमें सिर्फ एक छोटा सा खाका दिया गया है कि अध्याय 40 से 48 में और भी विस्तार से क्या बताया जाएगा। लेकिन मुद्दा यह है कि, मातृभूमि में, अंततः, केवल इस्राएल के

परमेश्वर की ही पूजा की जाएगी, और परमेश्वर अपने स्वदेश लौटे लोगों की शुद्ध पूजा को स्वीकार करेगा, जो किसी भी मूर्तिपूजक अधिकार से मुक्त होगा। इसका मतलब यह होगा कि वह पुरानी समस्या, जिसका उल्लेख अध्याय 20 में किया गया था, परमेश्वर की खराब प्रतिष्ठा के बारे में है।

अध्याय 20 में कई चरणों में, लोग दण्ड के पात्र हैं, और परमेश्वर ने अपने नाम, अपनी प्रतिष्ठा के लिए, अपने आप को रोक लिया। हे भगवान, अगर मैं जंगल में इस्राएलियों को नष्ट कर दूँ तो राष्ट्र मेरे बारे में क्या सोचेंगे? वे कहेंगे, अच्छा, वह कोई बहुत अच्छा परमेश्वर नहीं था, है न? वह बहुत कमज़ोर परमेश्वर था। और यह अध्याय 20 के माध्यम से एक उछाल है।

हमने इसे पद 9 में पढ़ा, मैंने अपने नाम के लिए काम किया। यह पद 14 में आया, मैंने अपने नाम के लिए काम किया, ताकि यह राष्ट्रों की दृष्टि में अपवित्र न हो। हमने इसे पद 22 में पढ़ा: मैंने अपना हाथ रोक लिया और अपने नाम के लिए काम किया, ताकि यह राष्ट्रों की दृष्टि में अपवित्र न हो।

और बार-बार, यह धार्मिक समस्या है जो परमेश्वर के पास है, कि वह उन्हें दंडित नहीं कर सकता क्योंकि इससे अन्य राष्ट्रों पर गलत प्रभाव पड़ेगा। और फिर विचार यहाँ है, मैं राष्ट्रों की दृष्टि में तुम्हारे बीच अपनी पवित्रता प्रकट करूँगा जब तुम वादा किए गए देश में वापस आओगे और धन्य होगे और अपनी आराधना में मुझे उचित रूप से स्वीकार करोगे, तब मैं एक शक्तिशाली और पवित्र परमेश्वर के रूप में दिखाया जाऊँगा और राष्ट्रों को इसे पहचानना होगा। और यह, निश्चित रूप से, एक और भजन है जो इस तरह से बोलता है।

भजन 126 और श्लोक 2 क्या है? भजन 126, लोग निर्वासन से वापस चले गए, तब हमारा मुँह हँसी से भर गया, हमारी जीभ खुशी के नारे से भर गई, तब राष्ट्रों में यह कहा गया, प्रभु ने उनके लिए महान कार्य किए हैं। और इस्राएल ने वही दोहराया जो राष्ट्र कहते हैं: प्रभु ने हमारे लिए महान कार्य किए हैं, और हम आनन्दित हैं। यह अंतिम उत्तर होगा, और निर्वासन से वापसी से परमेश्वर का नाम कायम रहेगा और सम्मानित होगा।

लेकिन बहाल हुए इस्राएल का एक दायित्व था। उन्हें कभी नहीं भूलना चाहिए कि वे किस गहराई में डूब गए थे। और यह श्लोक 43 में आता है: तुम अपने तरीकों और अपने सभी कामों को याद करोगे जिनके द्वारा तुमने खुद को अशुद्ध किया है, और तुम उन सभी बुराइयों के लिए खुद से घृणा करोगे जो तुमने की हैं। और वे, वह स्मृति, वह बुरी स्मृति, इस बात की स्थायी याद दिलाएगी कि उन्हें परमेश्वर के प्रति क्या ऋण था।

अध्याय 16, श्लोक 61 में भी यही बात कही गई थी कि ऐसी याद हमें फिर से उस बुतपरस्त रास्ते पर जाने से रोकेगी। अगली बार, हम अध्याय 20 को समाप्त करेंगे, 20:45 से अध्याय 23 के अंत तक।

यह डॉ. लेस्ली एलन द्वारा यहजेकेल की पुस्तक पर दिया गया शिक्षण है। यह सत्र 10, भाग 3, निर्गमन पुराना और नया, यहजेकेल 20:1-44 है।